अक्तूम्बर 2020

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

'मैं'पन, वह अहम् है और
'मैं'पन का प्रस्ताव करना, वह अहंकार है।
फिर, 'मैं प्रेसिडेन्ट हूँ', वह मानी कहलाता है।
और, 'यह मेरा बंगला है,
मेरी गाड़ी है', वह अभिमान है।

पूज्य नीरू माँ/पूज्य दीपक भाई को देखिए टी.वी. चैनल पर

भारत

- **'अरिहंत'** चैनल पर हर रोज सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3, और रात 8 से 9 (गुजराती में)
- **'साधना'** पर हर रोज सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 (हिन्दी में) - **नया कार्यक्रम**
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज सुबह 7 से 8 (हिन्दी में)
- **'वालम' टीवी** पर हर रोज शाम 6 से 6-30 (गुजराती में- सिर्फ गुजरात राज्य में) - **नया कार्यक्रम**
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में- केवल उड़ीसा में)

USA - Canada

- **'TV Asia'**- पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 EST
- **'Rishtey'** पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 EST (हिन्दी में)

U K

- **'वीनस'** टी.वी. पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 GMT (हिन्दी में)
- **'वीनस'** टी.वी. पर हर रोज सुबह 8-30 से 9 GMT (गुजराती में)
- **'MA TV'** पर हर रोज शाम 5:30 से 6:30 GMT
- **'Rishtey'** पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6 to 6-30 am GMT)

USA - UK - Africa - Australia

- **'आस्था ग्लोबल'** पर सोम से शुक्र रात 10 से 10:30 IST
  (डिश टी.वी. चैनल **U.K.**-849, **U.S.A.**-719)(गुजराती और हिन्दी में)

Australia

- **'Rishtey'** पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

Fiji - NZ - Singapore - SA - UAE

- **'Rishtey'** पर हर रोज सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में)

टिप्पणी : दूरदर्शन के विविध टी.वी. चैनलों पर प्रसारित होने वाले सत्संग कार्यक्रम 1 अगस्त 2020 से बंद हो गए हैं। दूसरी अन्य चैनलों पर कुछ दिनों में सत्संग कार्यक्रम शुरू होंगे जिनकी जानकारी आपको दी जाएगी।

वर्ष : 15 अंक : 12
अखंड क्रमांक : 180
अक्तूबर 2020
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2020
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यताशुल्क)

15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड

वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड

भारत में D.D./M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

पहचानें अहंकार के विस्तृत स्वरूपों को

संपादकीय

इस संसार में अपने शत्रु कौन है? कषाय! क्रोध-मान-माया-लोभ और राग-द्वेष, ये आंतरिक शत्रु ही तमाम दुःखों और जन्मोंजन्म की भटकन के कारण हैं। और इन कषायों का आधार क्या है? अहंकार। जहाँ पर खुद नहीं है वहाँ पर 'मैं हूँ', ऐसा मानना अहंकार है, और उसी से यह संसार खड़ा है। मूल रूप से अहंकार और उससे उत्पन्न होते कषायों का रूट कॉज़ है अज्ञानता।

अब, इस अहंकार से कैसे मुक्त हो सकते हैं? जैसे कि बंधा हुआ, खुद अपने आप नहीं छूट सकता, कोई मुक्त हुआ ही मुक्त करवा सकता है; वैसे ही जिनके अहंकार और ममता पूर्ण रूप से खत्म हो गए हैं, ऐसे ज्ञानी पुरुष की कृपा से, अक्रम मार्ग में ज्ञानविधि की सिद्धि द्वारा सिर्फ दो ही घंटे में, जीवित अहंकार से हमेशा के लिए छूटा जा सकता है, जिसका हम सभी ने अनुभव किया है। अब बाकी बचता है, डिस्चार्ज अहंकार। ज्ञान के बाद जैसे-जैसे इस अहंकार को पहचानते जाते हैं, अहंकार गलत है ऐसा समझ में आता जाता है और उसे अलग देखते जाते हैं वैसे-वैसे वह विलय होता जाता है। प्रस्तुत अंक में, इस अहंकार को पहचानने के लिए उसके स्वरूप का विस्तार से विश्लेषण हुआ है।

परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) ने पर्यायवाची लगने वाले शब्द जैसे कि अहम्, अहंकार, मान, अभिमान, स्वमान और गर्व वगैरह शब्दों के यहाँ सूक्ष्म स्पष्टीकरण किए हैं। 'मैं'पन, वह अहम् है और 'मैं'पन का प्रस्ताव करना, वह अहंकार जैसे कि मैं चंदूभाई हूँ, इसका पति हूँ, इसका पिता हूँ। अहंकार में मालिकीपन आने से वह मान हुआ, 'इगो विथ रिच मटीरियल्स'। मान का प्रदर्शन करना - यह मेरा बंगला, यह मेरी गाड़ी, वह अभिमान है। स्वमान अर्थात् खुद की जो क्वॉलिटी हैं सिर्फ उतना ही मान। गर्व अर्थात् जहाँ खुद नहीं करता वहाँ 'मैं करता हूँ', 'मैंने कितना अच्छा किया', ऐसा मानना, वह। इसके अलावा यहाँ सरल भाषा में घमंड, *घेमराजी, तुमाखी, तुंडमिज़ाजी* वगैरह शब्दों के भी उदाहरण सहित स्पष्टीकरण मिलते हैं।

अक्रम में खुद के अहंकार को जो जानता है, वह 'खुद' अहंकार से मुक्त ही होता है। जैसे जलती हुई होली को देखने वाला उससे अलग ही होता है, वैसे ही जो अहंकार को अलग रखकर उसे पहचानता है, उसका कल्याण हो जाता है! जिस रास्ते से अहंकार बढ़ता है उसी रास्ते पर वापस लौटने से कम होता है। जितना उपयोग शुद्ध उतना अहंकार विलय होता रहता है। ज्ञान के बाद मूल अहंकार खत्म हुआ लेकिन उसके परिणाम बाकी रहे हैं। अहंकार के सभी परिणाम खत्म हो जाएँ तब केवलज्ञान होता है। अब, ज्ञान के बाद डिस्चार्ज अहंकार के स्वरूप को पहचानकर, उसके *निकाल* करने के पुरुषार्थ में, यह अंक महात्माओं को प्रथम सोपान पूर्ण करवाएगा, यही अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

पहचानें अहंकार के विस्तृत स्वरूपों को

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

खुद के कषाय ही खुद के दुश्मन

(इस संसार में) बाहर अन्य कोई दुश्मन है ही नहीं। खुद के कषाय ही खुद के दुश्मन हैं और वे कषाय ही उसे मार रहे हैं। उसे बाहर का कोई नहीं मारता। वास्तव में गुनहगार अपने कषाय हैं।

प्रश्नकर्ता : कषाय, वह क्या है?

दादाश्री : आत्मा को पीड़ित करें, वे सभी कषाय हैं। कषाय अर्थात् अंदर आत्मा को (प्रतिष्ठित आत्मा को) दु:ख हुआ करता है, *अजंपा* (अशांति, घबराहट) हुआ करता है, वह। राग-द्वेष, क्रोध-मान-माया-लोभ, ये सब दु:ख देने वाली चीज़ें हैं। उन्हें ही कषाय कहा जाता है।

मनुष्यों को ये क्रोध-मान-माया-लोभ एक क्षण के लिए चैन से बैठने नहीं देते। निरंतर छटपटाहट, छटपटाहट, छटपटाहट! ऐसा आपने देखा है? यह मछली छटपटाती है क्या? पानी के बाहर निकालें तब मछली छटपटाए, वैसे ही ये मनुष्य बिना बाहर निकाले छटपटाते हैं। घर में हों तो भी छटपटाहट, ऑफिस में जाएँ तो भी छटपटाहट, पूरा दिन छटपटाहट! अब यह छटपटाहट बंद हो जाए तो कितना आनंद रहेगा! देखो, हमारी छटपटाहट बंद हो गई है तो कैसी-कैसी बातें निकलती हैं न! पूरे जगत् को छटपटाहट, छटपटाहट, छटपटाहट रहने वाली है। इन्हें तो अच्छा भोजन हो तो भी खाते समय भी अंदर छटपटाहट बंद नहीं होती है। बोलो, किस तरह जी पाते हैं, वह भी आश्चर्य है न?

कषायों का आधार

प्रश्नकर्ता : ये कषाय किस आधार पर हैं?

दादाश्री : अज्ञान के आधार पर हैं। अज्ञानता ही इन सब का 'बेसमेन्ट' (आधार) है। अज्ञानता गई कि सारा हल आ गया। अज्ञानता हमारे समझाने से चली जाती है। अज्ञान जाए तो कषाय कम होने लगते हैं, यानी राग-द्वेष कम होने लगते हैं। फिर प्रकृति खाली होने लगती है।

जब तक अहंकार है, 'मैं ही हूँ, मैं ही हूँ', तब तक क्रोध-मान-माया-लोभ एक भी खत्म नहीं होते हैं।

अहंकार का ही दखल है। अहंकार की वज़ह से ही यह जगत् खड़ा रहा है। क्रोध-मान-माया-लोभ, अहंकार के अधीन हैं। अहंकार नहीं हो तो वे क्रोध-मान-माया-लोभ हैं, फिर भी नहीं हैं। क्योंकि उनका आधार अहंकार है और अहंकार भी आधारी चीज़ है। उसका रूट कॉज़ अज्ञानता है। लेकिन अज्ञानता तो समझो कि है ही, सारी दुनिया में फैली हुई। इसलिए क्रोध-मान-माया-लोभ का आधार क्या है? अहंकार। जगत् का आधार कौन? अहंकार! अहंकार निकाल लें तो क्रोध-मान-माया-लोभ कुछ करने वाले नहीं हैं। सभी मृत हो गए।

अहंकार का स्वरूप

प्रश्नकर्ता : अहंकार की सही परिभाषा क्या है?

दादाश्री : अहंकार की सही परिभाषा जगत् समझा नहीं है। लोग जो समझे हैं, उस अनुसार नहीं है। सब खुद की भाषा में ही समझते हैं। हर एक की खुद की भाषा अलग होती है न? पर वह भगवान की भाषा के सामने नहीं चलेगी। वहाँ तो 'टेस्ट लेने वाले' हैं, वहाँ वह काम नहीं आएगी।

अहंकार अर्थात् क्या? जो स्वयं नहीं है, उसका आरोपण करना। जो स्वयं है उसे जानता नहीं और जो नहीं है उसका आरोपण करता है, वह अहंकार है। वह किस-किस को होता है? वह पद किस-किस पर लागू होता है? सभी पर लागू होता है। सभी अहंकारी कहलाते हैं। अहंकार अर्थात् वस्तु के आधार पर नहीं। उसकी मान्यता में क्या बरतता है? 'जो नहीं है ऐसा।' 'मैं' 'चंदूभाई' नहीं हूँ लेकिन मानता है कि 'मैं चंदूभाई हूँ' यही अहंकार!

'मैं चंदूभाई हूँ', वह अहंकार है। सिर्फ यही अहंकार नहीं है। अहंकार कितने सारे हैं वह बतलाता हूँ। कहेगा, 'इस बहन का पिता हूँ', वह दूसरा अहंकार। 'इस बहन का पति हूँ', वह तीसरा अहंकार, 'मैं इतने साल का हूँ', वह चौथा अहंकार, 'मैं मोटा हूँ', वह पाँचवाँ अहंकार, 'मैं काला हूँ', वह छठवाँ अहंकार, 'मैं इसका दादा हूँ', वह सातवाँ अहंकार, और 'मैं इसका मामा हूँ', वह आठवाँ अहंकार। 'मैं इसका फूफा हूँ', ऐसे कितने अहंकार होंगे? अर्थात् आरोपित भाव को अहंकार कहते हैं और मौलिक (स्वाभाविक) भाव को निर्अहंकार। 'मैं गरीब हूँ', ऐसा कहते हैं न, उसे क्या कहेंगे?

प्रश्नकर्ता : अहंकार।

दादाश्री : फिर, 'मैं बीमार हूँ', वह अहंकार है, 'मैं स्वस्थ हूँ', वह अहंकार, 'मैं डॉक्टर हूँ', वह भी अहंकार है। फिर कहते हैं, हम शाह हैं, 'ओहोहो! कभी चोरी नहीं की हो, ऐसे शाह! शाह कैसे होते हैं? सिर्फ हिसाब-किताब में ही नहीं लेकिन किसी भी प्रकार की चोरी ही नहीं, उन्हें कहते हैं शाह! यह सब इगोइज़म है, अहंकार है। यह आत्मा का लक्षण नहीं है। यह सारा संसार अहंकार के आधार पर ही तो टिका है। ऐसे वह कब तक टिका रहता है? जब तक 'मैं कौन हूँ' का भान नहीं होता तब तक टिका रहता है।

अहम् व अहंकार की आदि और वृद्धि

प्रश्नकर्ता : यह जो अहम् और अहंकार कहते हैं, वे दोनों एक ही है या अलग-अलग है?

दादाश्री : अलग-अलग है। शब्द ही अलग है न!

प्रश्नकर्ता : इनमें क्या अंतर है?

दादाश्री : यदि कोई अहम् आत्मा कहे तो उससे हर्ज नहीं है लेकिन यदि अहंकार आत्मा कहे तो? क्या होगा? अहम् का हर्ज नहीं है, अहंकार का हर्ज है। अहम्, वह अहंकार नहीं है। 'अहम् ब्रह्मास्मि', में अहम् का प्रयोग होता है न! क्योंकि अहम् तो होना चाहिए, लेकिन किस चीज़ का? खुद के स्वरूप का अहम् होना चाहिए। जो नहीं है, उसका अहम् क्यों होना चाहिए? अहम् पॉइज़न नहीं है, अहंकार पॉइज़न है। अहम् अर्थात् 'मैं'।

प्रश्नकर्ता : हम ऐसा मानते थे कि अहम् का मतलब अहंकार ही है।

दादाश्री : नहीं, अहंकार और अहम् में तो बहुत फर्क है।

प्रश्नकर्ता : इनमें भी फर्क हैं! इनमें क्या फर्क है? वह ज़रा सूक्ष्मता से समझाइए न!

दादाश्री : 'मैं'पन, वह अहम् है और 'मैं'पन का प्रस्ताव करना (मैं चंदूभाई हूँ), वह अहंकार है। 'मैं प्रेसिडेन्ट (प्रधान) हूँ', वह अहंकार नहीं कहलाता। लोग तो ऐसा कहते हैं कि 'अहंकारी पुरुष है', लेकिन वास्तव में वह मानी पुरुष कहलाता है। अहंकार तो, जहाँ पर संसार की कोई चीज़ स्पर्श नहीं करती और जहाँ पर खुद नहीं है, वहाँ पर ऐसा मानता है कि 'मैं हूँ', वह सब अहंकार में आता है। वस्तु में कुछ भी नहीं होता। लेकिन जैसे ही दूसरी वस्तु को छूता है तो उससे मान होता है! 'मैं प्रेसिडेन्ट हूँ', ऐसा सब दिखाए तो हम समझ जाएँगे न, कि यह व्यक्ति मानी है।

प्रश्नकर्ता : प्रस्ताव में क्या आता है?

दादाश्री : ज़रूरत से ज़्यादा 'मैं'पन बोलना। वह 'मैं' तो है ही, अहम् तो है ही मान्यता में लेकिन उसका प्रस्ताव करना कि 'यह सही है और यह गलत है', इस तरह से शोर मचाने जाता है, वह अहंकार कहलाता है। लेकिन उसमें दूसरी चीज़ नहीं है, मालिकीपन नहीं आता किसी भी चीज़ पर। मालिकीपन आ जाए तो 'मान' आता है।

सिर्फ मान ही नहीं, उसके बाद जैसे-जैसे मालिकी भाव बढ़ता जाता है न, वह अभिमान है। देहधारी हो तो वह मानी कहलाता है और 'यह फ्लेट हमारा है, यह हमारा', वह अभिमान है। अर्थात् अहंकार से मानी, अभिमानी, बहुत तरह के पर्याय उत्पन्न होते हैं।

अहंकार अर्थात् लोग जो समझते हैं, वह अहंकार नहीं कहलाता। लोग जिसे अहंकार कहते हैं न, वह तो मान है। अहंकार बिलीफ (मान्यता) में है, ज्ञान में नहीं है। जो ज्ञान में आए, वह मान कहलाता है। जहाँ खुद नहीं करता है और वहाँ पर ऐसा मानता है कि 'मैं कर रहा हूँ', उसे कहते हैं अहंकार।

प्रश्नकर्ता : अब इसे एक उदाहरण देकर समझाइए!

दादाश्री : अपने यहाँ पर कहते हैं न कि, 'मैं नीचे आया'। अब ऊपर से नीचे आया, उसमें खुद आया ही नहीं है। वह तो, यह शरीर आया है। यह शरीर आया, उसे वह खुद ऐसा मानता है कि, 'मैं आया', ऐसी जो मान्यता है, वह अहंकार है और फिर वह कहता भी है कि 'मैं आया', वह मान कहलाता है। तो लोग तो 'मैं आया', उसी को अहंकार कहते हैं।

अहंकार यानी खुद नहीं करता है, फिर भी कहता है कि 'मैं करता हूँ'। वह आरोपित भाव है, उसे अहंकार कहा जाता है। रिलेटिव वस्तु को 'मैं हूँ' कहा वही अहंकार। अहंकार मूल वस्तु है और उसमें से मान, अभिमान, (अपमान) गर्व, *घेमराजी,* मद, मत्सर सब तरह-तरह के शब्द बने हैं। ये सारे अलग-अलग शब्द अलग-अलग समय पर प्रयोग होते हैं। ये सारे स्थूल अर्थ समझने के लिए हैं इसलिए ज्ञानियों ने अलग-अलग नाम दिए हैं।

अहंकार, मान व अभिमान की परिभाषा

प्रश्नकर्ता : अहंकार, मान और अभिमान, इनमें क्या फर्क है?

दादाश्री : अहंकार के विस्तृत स्वरूप को मान कहते हैं और जो ममता सहित होता है, उसे

अभिमान कहते हैं। कुछ भी, किंचित्मात्र ममता जैसे कि, 'यह मेरी मोटर है' ऐसा कहे तो इसे दिखाने के पीछे क्या होता है? अभिमान। उसके बच्चे ज़रा गोरे हों तो हमें दिखाता है, 'देखो, मेरे चारों बच्चे दिखाता हूँ।' वह है ममता और अभिमान! यानी जहाँ अभिमान होता है, वहाँ हमें ऐसा सब बताता रहता है।

अभिमान कैसी चीज़ है? उसमें आरोपित भाव अर्थात् कि अहंकार तो है ही, लेकिन 'मेरे चार बंगले हैं, दो गाड़ियाँ हैं' ऐसा प्रदर्शन करे, वह अभिमान कहलाता है।

जो खुद नहीं करता है, उसे करने का आरोप करे, वह अहंकार है। मान अर्थात् अहंकार का विस्तृत स्वरूप, बहुवचन है।

प्रश्नकर्ता : फिर मान में से ही अभिमान जन्म लेता होगा न?

दादाश्री : नहीं। अभिमान कब जन्म लेता है? ममता हो, तब अभिमान जन्म लेता है।

अहंकार अलग दशा है और अभिमान अलग दशा है। लोगों को कुछ भान तो है ही नहीं, वास्तव में भान नहीं है। कुछ भी बोलते रहते हैं! मन में जो आए वैसा कहते हैं कि 'यह अभिमानी आदमी है, यह अहंकारी आदमी है।' अहंकारी तो हर एक मनुष्य है। कोई व्यक्ति अहंकारी नहीं हो, ऐसा नहीं है। सिर्फ 'ज्ञानी' ही अहंकारी नहीं हैं और 'ज्ञानी' के 'फॉलोअर्स' भी अहंकारी नहीं हैं। बाकी, दूसरे सभी लोग अहंकारी। यानी, यह ज्ञान मिलने के बाद अज्ञान गया, मतलब अहंकार गया। यानी 'स्वयं' यदि 'शुद्धात्मा' है तो अहंकार नहीं है और अगर 'चंदूभाई' हो तो अहंकार है।

अहंकार अर्थात् जहाँ स्वयं नहीं है वहाँ आरोप करता है। इतना ही गुनाह है। अहंकार का और कोई गुनाह नहीं है।

अब मान अर्थात् क्या? कि यहाँ पर 'फर्स्ट क्लास' कपड़े पहनकर और तीन हज़ार की घड़ी डालकर, यों ज़रा बाँहें ऊपर रखता है ताकि लोगों को दिखाई दे। फिर कोई पूछे, 'कैसे हो सेठ?' तो यह मान दिखता है हमें, खुल्लमखुल्ला। क्योंकि उसके पास अच्छा-अच्छा सामान.. शृंगार किया होता है, उसे मान कहते हैं।

अहंकारी और मानी में अंतर

प्रश्नकर्ता : अहंकारी और मानी के बीच क्या फर्क है?

दादाश्री : अहंकारी को अपमान का भय नहीं लगता। मानी को अपमान का भय रहता है। जो मानी होता है, उसे अपमान का भय लगा रहता है। जबकि अहंकारी को अपमान का भय नहीं लगता। मान हो तो अपमान लगेगा न! जहाँ मान ही नहीं हो, वहाँ पर?

यदि कोई मज़दूर जा रहा हो, तो हम कहें, 'अरे, तेरा नाम क्या है?' तब वह कहता है, 'ललवा।' अब वह अपने आपको लल्लू भाई नहीं कहता, तो हम समझ जाते हैं कि यह सिर्फ अहंकारी ही है। और हम किसी से पूछे कि, 'क्या नाम?' तब वह कहता है कि, 'लल्लू भाई।' तब हम समझ जाते हैं कि साथ ही यह मानी भी है।

और दूसरा कोई जा रहा हो और हम पूछे, 'कौन हो आप?' तब वह कहता है, 'मैं लल्लू भाई वकील, नहीं पहचाना मुझे?' यानी अभिमानी भी कहा जाएगा।

अर्थात् ये सब हैं इनके लक्षण!

फिर जब अहंकार ममता सहित हो, तब

अभिमान खड़ा होता है। कोई भी ममता, चाहे किसी भी प्रकार की! यानी किसी भी प्रकार की ममता सहित है तो वह अभिमान हुआ। जब सिर्फ अहंकार हो, ममता रहित हो, तो वह अहंकार कहलाता है।

मान का दिखावा, वह है अभिमान

अभिमान किसे कहते हैं? खुद के पास कोई साधन हो, तो लोगों को वे सब बताता है। उसे अभिमान कहते हैं। वह तो हर एक व्यक्ति कह देता है। हर एक व्यक्ति के पास जो कुछ भी होता है, उसे बताए बगैर रहता नहीं है। यानी अभिमान कब कहलाता है? कि अहंकार तो है ही, लेकिन दुकान पर जाए तब रास्ते में जाते वक्त वह व्यक्ति हम से कहेगा कि, 'रुकिए।' 'भाई, क्या है जो रुकें? जल्दी है न!' तब वह कहेगा, 'यह हमारा मकान है। ये चार बिल्डिंगें, ये दो और वे दो हमारी।' वह सारा अभिमान कहलाता है। 'भाई, अभी मुझे जाना है, तू क्यों बातें कर रहा है? तू क्यों माथापच्ची कर रहा है?' लेकिन वह अपना अभिमान बता रहा है। हम नहीं पूछते फिर भी बताता है कि कितना सुंदर है! उसका क्या कारण है? उसे अभिमान है। पूछने पर जवाब दे तो वह अलग चीज़ है और बगैर पूछे जवाब दे, वह अभिमान! उसके मन में होता रहता है कि कब कह दूँ।' वह है अभिमान।

प्रश्नकर्ता : उस अभिमान की वजह से 'हमारा अधिक ऊँचा और उनका नीचा' ऐसा बताता है न?

दादाश्री : हाँ, अभिमान अर्थात् 'ऊँचा और नीचा।' उसका प्रमाण देता है कि 'यह मेरी जायदाद, वह मेरी जायदाद, यह मेरी गाड़ी।' यानी इसके आधार पर 'ऊँचा-नीचा' कहना चाहता है लेकिन ठीक से 'डायरेक्ट' 'ऊँचा-नीचा है' ऐसा नहीं कहता। अभिमान अर्थात् खुद के पास ज़रूरत से ज़्यादा चीज़ें हैं और उन्हें दिखाता है, वह अभिमान। उसके मन में ऐसा होता है कि 'देखो मैं कितना सुखी हूँ!' सामने वाले को नीचा दिखाने का प्रयत्न करना, उसे अभिमान कहते हैं।

यानी अभिमान तो यही सब बताता है, यह दिखाता है, वह दिखाता है। अरे, अच्छे डेढ़ सौ रुपये के चश्मे ले आए तो वे भी दिखाता है। 'देखे चश्मे?' कहेगा। 'अरे, मुझे तेरे चश्मे का क्या करना है भला, जो मुझे दिखा रहा है!' लेकिन अभिमान को पोषण देने के लिए कहता रहता है। अरे, साड़े तीन सौ रुपये की धोती ले आए न, उसे भी दिखाता रहता है। डेढ़ सौ के जूते ले आए तो वे भी दिखाता रहता है, वह अभिमान!

अभिमान अर्थात् सब जगह मान का प्रदर्शन करना, जहाँ-तहाँ। उसके भाई का मकान छोटा हो तो वह भी दिखाता है कि 'यह मेरे भाई का मकान, यह मेरे चाचा का मकान, वह मेरा मकान।' बड़ा है, उस तरह से दिखाता है। वहाँ पर अंदर अभिमान बरतता है। मान की खातिर खुद की चीज़ें सामने वाले को दिखाना अभिमान कहलाता है। क्यों दिखाता है? मान की खातिर। फिर मान से भी आगे जाता है, वह अभिमान में भी सीधा नहीं रहता। फिर कुदरत उसे मार-मारकर रास्ते पर ला देती है। इसलिए अगर खुद के पास दो-चार गाड़ियाँ हों, फिर भी उसका अहंकार नहीं करना चाहिए। उसका अभिमान नहीं करना चाहिए। अभिमान किया कि जाने की तैयारी हुई। नम्रता रखनी चाहिए। जैसे-जैसे हमारे पास विशेष सांसारिक साधन आते जाएँ न, वैसे-वैसे नम्रता आनी चाहिए।

फिर कहेगा, 'ये मेरे चार बेटे, यह मेरा

बेटा सी.ए. है और मुझे ऐसा है वगैरह, वगैरह।' वह सब अभिमान। 'मैं गोरा हूँ, मैं मोटा हूँ' ऐसे जो कुछ कहता है, वह सब अभिमान कहलाता है। ये सब साँवले हैं और खुद गोरा हो तो उस गोरेपन का उसे अभिमान है। रूप का मद होता है या नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : होता है।

दादाश्री : खुद की पत्नी बहुत सुंदर हो, तो खुद को उसका मद रहता है कि 'मेरी पत्नी जैसी तो किसी की पत्नी नहीं है।' ऐसा होता है या नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : होता है।

दादाश्री : अब यह रूप तो रहने वाला है नहीं। इस रूप को कुरूप होने में देर नहीं लगती। अगर 'चेचक' हो जाए तो घड़ी भर में ही कैसा रूप निकल आएगा उसका? 'चेचक' हो जाए तो रूप रहेगा? चाहे कितना भी सुंदर हो, फिर भी? क्या अपने हाथ में है यह सारी सत्ता? इसलिए उसका अहंकार नहीं करना चाहिए। 'मेरे जैसा सुंदर कोई नहीं है' यह अभिमान में गया। इसलिए 'मैं गोरा हूँ' ऐसा जो बोलते हैं, वह अहंकार नहीं है। लोग तो अहंकार को समझते ही नहीं जबकि अभिमानी तो तुरंत पहचाना जाता है।

प्रश्नकर्ता : जब ग्रुप फोटो खिंचवाना होता है, तब अभिमान तुरंत ही दिख जाता है।

दादाश्री : हाँ। अरे, फोटोग्राफर ही समझ जाता है कि यह अभिमान में आया है, और वह फोटोग्राफर मुझे देखते ही तुरंत स्विच दबा देता है। वह जानता है कि ये बिल्कुल अभिमान रहित दिख रहे हैं और अभिमानी तो यों सतर्क हो जाता है उस क्षण। अरे, सतर्क किसलिए हो जाता है? जबकि हम में साहजिकता होती है।

प्रश्नकर्ता : अभिमान अहंकार जैसा ही है न?

दादाश्री : नहीं। अहंकार तो अच्छा है। अहंकार तो निकाला जा सकता है जबकि अभिमान तो महादु:खदाई है। कुदरत का धंधा क्या है? अभिमान को उतारने का ही धंधा है। अभिमान बढ़ा कि गिर ही जाता है। लगाती है झापट ऊपर से! अहंकार में हर्ज नहीं है।

अहंकार और अभिमान

अभिमान और अहंकार में क्या फर्क है? 'मैं चंदूभाई,' वह अहंकार है। जहाँ आप नहीं हो वहाँ आरोपण करते हो कि 'यह मैं हूँ', वह अहंकार है और 'यह मेरा बंगला, यह मेरी मोटर', ऐसा दिखाए, वह अभिमान! तो फिर सफेद बाल क्यों नहीं दिखाते? 'देखो, मेरे सफेद बाल आ गए, देखो!' लेकिन अभी तो लोग काले कर लाते हैं वापस, हं! रंग लेते हैं! अर्थात् अहंकार तो नासमझी से हुआ है और अभिमान तो समझदारी से। खुद गर्वरस लेता है कि 'देखो, यह देखो, यह मेरा बाग देखो, यह देखो, वह देखो।' तब हम जान जाते हैं कि अभिमान चढ़ा है इसे।

अब कोई व्यक्ति भजन गाए, और हम खुश हो जाएँ तो वह और दो-तीन भजन गा लेता है। तो वह भी अभिमान!

अभिमान आपको समझ में आया न? कि पौद्गलिक 'वेट' को खुद का 'वेट' मानना। 'मैं बड़ा हूँ' ऐसा मानना, और सोने के आभूषण, घड़ी, घर वगैरह सबकुछ पौद्गलिक 'वेट' है और इन्हें खुद का 'वेट' मानना, वह अभिमान! इस बंगले के 'वेट' को वह खुद का 'वेट' मानता है। लोग तो, 'ये मेरे बंगले देखो और यह देखो,

वह देखो, यह मेरा बंगला कितना सुंदर है!' ऐसा बोले तो कोई कहेगा कि 'अहंकार बोल रहा है।' कोई कहेगा, 'यह अहंकारी है।' नहीं, वह अभिमानी कहलाएगा। चीज़ें तो उसके पास हैं, लेकिन उनका आरोपण करके, गर्वरस चखने के लिए खुद प्रदर्शन करना, वह अभिमान कहलाता है। अभिमान में तो, वह रस भी बहुत मीठा होता है। 'ये मेरे बंगले' ऐसा कहते ही तुरंत मिठास बरतती है। तब फिर उसे 'हेवमोर' (आइसक्रीम की ब्रान्ड) की जैसी आदत पड़ जाती है।

दूसरे लोगों को मान रखने का अधिकार है कि भाई देखो, मेरा घर का फ्लेट है, मेरे घर की गाड़ी है। ऐसा मान रखने का अधिकार ज़रूर है। बाकी, अभिमान रखने का कोई कारण नहीं है। जबकि अभिमान तो कौन कर सकता है? यहाँ पर जिनके पाँच-दस बड़े-बड़े मकान हों, वह अभिमान कर सकता है। उसके पास ऐसी कुछ सहूलियत होती है, एक छोटे गाँव की एस्टेट वगैरह कुछ होता है, वह अभिमान करता है। यह तो कोई भी एक फ्लेट हो पाँच-पच्चीस लाख का, और राई चढ़ाए उसका क्या अर्थ है फिर?! सरकार चाहे कितना भी परेशान करे, फिर भी जिसके वैभव में अन्य कोई नुकसान नहीं होता, अगर वह व्यक्ति कभी अभिमान करे तो चल सकता है।

प्रश्नकर्ता : राई भरी है यानी अभिमान अधिक होता है, उसी को कहते हैं न कि राई भरी हुई है?

दादाश्री : अभिमानी अलग और राई वाले अलग! राई वाले के पास कुछ भी जायदाद नहीं होती। अभिमान करने जैसा नहीं होता तब भी राई बहुत होती है, दिमाग़ में राई भरी होती है।

प्रश्नकर्ता : दादा, राई क्यों कहा होगा?

दादाश्री : वह ऐसे बोलता है कि आग जैसा लगता है। ऐसे बोलता है कि हमारा सिर दुःख जाए, हेडेक हो जाए।

अब आपको अभिमान समझ में आ गया? और अहंकार की बात समझ में आ गई?

जहाँ खुद ने नहीं किया, वहाँ 'मैंने किया' ऐसा कहता है, वह अहंकार है। अहंकार करके सीना तानकर घूमना, वह मान और फिर 'मैंने किया' ऐसा सब को कहते फिरना, वह अभिमान कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : और संयम आए तो संयम के साथ अभिमान भी होता रहता है न!

दादाश्री : जहाँ अभिमान है वहाँ पर संयम है ही नहीं। अभिमान अंधा है और जहाँ पर संयम हो वहाँ पर अभिमान तो नहीं, लेकिन अहंकार भी नहीं होना चाहिए।

मान और स्वमान

प्रश्नकर्ता : मान और स्वमान के बीच में क्या भेद है?

दादाश्री : मान अर्थात् 'इगो विथ रिच मटीरियल्स।' और स्वमान अर्थात् खुद की जो 'क्वॉलिटी' है न, उतना ही मान! खुद की जो 'क्वॉलिटी' 'फिक्स' है उतना ही मान कि 'भई, मैं ग्रेज्युएट हुआ हूँ।' तो 'ग्रेज्युएट' जितना ही मान। वह स्वमान खुद का, खुद जो है उतनी ही माँग करता है। उससे अधिक नहीं माँगता। स्वमान भंग होता है तब उसे लगता है कि 'मैं ग्रेज्युएट हूँ फिर भी ये क्या कह रहे हैं?' यानी 'ग्रेज्युएट' है उतना ही। उसकी उतनी योग्यता है, इसलिए उसे छेड़ना नहीं चाहिए। स्वमान भंग नहीं करना चाहिए किसी का।

और मान क्या है? कि उसके पास 'डिग्री'

या 'क्वॉलिटी' नहीं है, वह नहीं देखना है, और गुण की बात तो कहाँ गई लेकिन तीन हज़ार की घड़ी है, चश्मा सोने की फ्रेम वाला है, अच्छा लोंग कोट पहना है, यह सारा मान!

प्रश्नकर्ता : 'इगो' का घायल होना और स्वमान घायल होना, उन दोनों में फर्क है क्या?

दादाश्री : बहुत ही! स्वमान घायल होगा तब तो सामने वाला व्यक्ति बदला लेगा।

प्रश्नकर्ता : और 'इगो' घायल हुआ तो बदला नहीं लेता?

दादाश्री : नहीं, कुछ भी नहीं। 'इगो' में हर्ज नहीं है। लेकिन धनवान लोगों में 'इगो' होता ही नहीं है न! 'इगो' हमेशा सिर्फ गरीबों में ही होता है। हम कहें न, 'चल नालायक' तब भी कुछ असर नहीं होता, वह कहलाता है 'इगो'। फिर भी सिर्फ ऐसा ही नहीं है, 'इगो' पर असर हो भी सकता है और नहीं भी। 'इगो' रिएक्ट कर भी सकता है, उस समय (सामने वाले को) काट भी सकता है और शायद असर न भी हो। इन धनवानों में सिर्फ 'इगो' अकेला ही नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : तो धनवानों में क्या होता है?

दादाश्री : धनवानों में मान होता है, अभिमान होता है, स्वमान होता है, ऐसा सब तरह-तरह का होता है। उनमें 'इगो' विथ (के साथ) बहुत कुछ होता है जबकि इन गरीबों में 'इगो' विथ (के साथ) कुछ भी नहीं होता बेचारों के पास।

प्रश्नकर्ता : किसी व्यक्ति ने कोई अच्छा कार्य किया हो और उसका अभिमान करे और किसी व्यक्ति को नीचे गिराने का अभिमान करे तो?

दादाश्री : वह सब अभिमान नहीं माना जाता।

प्रश्नकर्ता : तो इन दोनों के बीच में क्या फर्क है?

दादाश्री : मान और अभिमान, वे 'विथ रिच मटीरियल्स'!

प्रश्नकर्ता : यानी मान और अभिमान, वे साधन-संपत्ति से जुड़े हैं?

दादाश्री : हाँ। बाकी कुछ नहीं।

स्वमान और अभिमान

प्रश्नकर्ता : स्वमान और अभिमान इन दोनों के बीच में क्या भेद है?

दादाश्री : स्वमान किस तरह का मान है? 'मुझे कोई ज़रा भी तंग न करे, उस तरह का मान और मेरी स्थिरता को कोई डिगाए नहीं।' स्वमान तो व्यक्ति उतने तक ही रखता है कि कोई उसे परेशान न करे और अभिमानी का मतलब तो, कोई अगर अभिमानी है न, तो वह क्या कहेगा कि, 'यहाँ से अपना बंगला शुरू हुआ, तो वहाँ तक बंगला है, उसमें उसके पीछे तो आपने देखा ही नहीं।' फिर उसकी बेटी के लिए ज़ेवर बनवाए हों, तो वे सब हमें दिखाता है। उसका अभिमान पुसाए इसलिए हमें दिखाते हैं। फिर, उसकी ज़मीन हो तो वह सब दिखाते हैं कि 'यह दो सौ बीघा ज़मीन मेरी है।' और अभिमानी हो न, वह तो पूरे दिन शीशे में देखता रहता है कि 'मैं कितना सुंदर हूँ!' और लोग कहते हैं न, 'हमारे बाप-दादा ऐसे थे और कुलीन वगैरह,' वे सभी अभिमानी। उसे स्वमानी नहीं कहते।

स्वमानी तो, उसमें व्यवहार से, लेन-देन होता है। स्वमान अर्थात् सामने वाले का स्वमान रखना और उसके बदले में खुद का स्वमान प्राप्त करना, वह स्वमान कहलाता है। अतः संसार व्यवहार में स्वमान, वह तो व्यवहार है। स्वमान

भंग नहीं हो तब तक चला लेना पड़ता है। हालाँकि हमें तो यह मोक्षमार्ग मिल गया है इसलिए हमारे लिए स्वमान की तो बात ही नहीं रहती लेकिन संसार व्यवहार को स्वमान तक संभाल लेना चाहिए, नहीं तो ढीठ कहलाएँगे। स्वमानशील तो होना ही चाहिए न! अज्ञानी में भी इतना तो होना ही चाहिए। इतनी 'बाउन्ड्री' तो चाहिए ही न! 'बाउन्ड्री' से बाहर तो कैसे चलेगा?! स्वमान अर्थात् अपमान नहीं हो, उसके लिए रक्षण करना।

स्वमान तो बहुत बड़ी चीज़ है, अज्ञान दशा में सद्गुण की 'लिमिट' है! स्वमान की तो हमने बहुत प्रशंसा की है इस वजह से कि यह अज्ञान दशा में सद्गुण की 'लिमिट' है! अज्ञान दशा में सद्गुण होते हैं न? उनकी 'लिमिट' है यह!

प्रश्नकर्ता : स्वमान क्षम्य है या नहीं?

दादाश्री : यह 'ज्ञान' लिया हो न, तो स्वमान क्षम्य है। नहीं तो स्वमान रखना ही चाहिए। अज्ञान दशा में भी स्वमान तो रखना ही चाहिए न! स्वमान नहीं होगा तो बेशर्म हो जाएगा फिर। बेशर्म हो जाएगा तो 'बाउन्ड्री' चूक जाएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन स्वमान में अहम् का अंश है या नहीं?

दादाश्री : हाँ, वह अहम् तो है ही लेकिन फिर भी बेशर्म नहीं हो जाता। स्वमान के कारण 'बाउन्ड्री' में रहेगा, 'बाउन्ड्री' नहीं चूकेगा वह कभी भी, इसलिए अज्ञान दशा में भी स्वमान की ज़रूरत है।

प्रश्नकर्ता : अब हर एक का खुद का स्वमान तो होता है। अतः हमें अपना स्वमान तो रखना चाहिए न?

दादाश्री : यह 'ज्ञान' लिया, अब स्वमान किसलिए रखना है? अब स्वमान वगैरह कुछ नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कभी परिस्थितिवश कुछ ऐसी घटना हो जाए, तब हमें अपना स्वमान रखना चाहिए न?

दादाश्री : लेकिन स्वमान और हमारा लेना-देना नहीं है। मान और स्वमान सभी गया। ऐसा है, जिसका 'स्व' बदला हुआ नहीं हो, उसे स्वमान रखना है। यह तो, 'स्व' ही बदल गया, फिर वहाँ पर क्या है! जहाँ 'स्व' बदल गया, वहाँ स्वमान रहेगा क्या? समझ में नहीं आया आपको?

प्रश्नकर्ता : लेकिन ड्रामेटिक स्वमान तो रखना चाहिए न?

दादाश्री : वह तो रहता ही है। जितना रहे, उतना सही। बाकी, स्वमान रखने की ज़रूरत नहीं है। हम फिर से कहाँ वह नया धंधा शुरू करें, नया व्यापार?!

स्वमान अर्थात्, मैं 'चंदूभाई' हूँ और खुद के उस मान को संभालना। लेकिन जब तक आप 'चंदूभाई' हो तभी तक और आप शुद्धात्मा हो गए, तो वह बात ही कहाँ रही?! इस 'ज्ञान' के बाद 'खुद' 'आत्मा' हो गया, फिर स्वमान रहा ही कहाँ?! स्वमान तो, देहाध्यास का मान, उसे स्वमान कहते हैं। लेकिन 'हम' 'आत्मा' हो गए फिर स्वमान रहा ही कहाँ? फिर भी *निकाली* स्वमान रहता है। *निकाली* से हमें लेना-देना नहीं है न!

अभिमानी : मिथ्याभिमानी

प्रश्नकर्ता : अभिमान और मिथ्याभिमान में क्या फर्क है?

दादाश्री : अभिमान तो, घर उसके खुद

के हों और रूबरू दिखाए वह अभिमान कहलाता है और मिथ्याभिमानी को तो, भाई का खाने का भी ठिकाना नहीं हो और बाहर लोगों से कहेगा, 'हमारे यहाँ तो इतना ठाठ-बाट है...' वगैरह ऐसी सब गप्प लगाता है। ऐसे लोग नहीं देखे? लोग भी कहते हैं कि यह मिथ्याभिमानी है। मिथ्या यानी कि कुछ है नहीं और अभिमान करता है, डींगे हाँकता है। जबकि अभिमानी तो, लोग उसे जानते हैं कि, 'नहीं, भाई जायदाद वाला है, इसलिए अभिमान करता है। अभिमान करने योग्य है लेकिन उसे अभिमान नहीं करना चाहिए, उसे कहना नहीं चाहिए।' अभिमानी यानी कि हम उसे ज़रूरत से ज़्यादा मान देते ही हैं क्योंकि वह धनवान है न! लेकिन उसने कहा तो फिर हमें कड़वा लगता है कि 'तू खुद क्यों बोला? हम वाह-वाह कर रहे हैं, तुझे वही सुननी है।'

वह है मिथ्याभिमान

प्रश्नकर्ता : मिथ्याभिमान के लिए कोई उदाहरण दीजिए न!

दादाश्री : मिथ्याभिमान अर्थात् क्या? घर भी नहीं हो और फिर कहता है, 'मेरी बहुत सारी जायदाद है।'

एक पटेल गाड़ी में बैठे थे। वे हमारे गाँव के ही थे। साथ में कोई गाँव का आदमी होगा। वह अच्छा आदमी था। उसने पूछा, 'चाचा, कहाँ जा रहे हो?' तब उसने कहा, 'भादरण जा रहा हूँ।' 'वहाँ कितने दिन रहोगे?' उस आदमी ने पूछा। तब पटेल ने कहा, 'भाई, रहना तो दस-बारह दिन ही है लेकिन दो दिन तो मुझे घर साफ करने में लगेंगे।' 'घर साफ करने में एक-दो घंटे लगते हैं।' उस भाई ने कहा, तब पटेल ने कहा, 'भाई, नीचे का कमरा साफ करने में ही दो-चार घंटे लग जाते हैं, फिर दूसरी मंज़िल, तीसरी मंज़िल। सभी जगह सफाई करनी है और फिर बाथरूम धोने हैं, फलाना धोना है। सौ-डेढ़ सौ गद्दे होंगे, फिर वे सारे साफ करने हैं।' उसने तो यों बड़ी-बड़ी बातें की और वह आदमी भी सुनता रहा। कैसा चित्रण किया! डेढ़ सौ गद्दे!

फिर उनकी 'वाइफ', आकर मुझसे कह रही थी, 'देखो न, ये तो ऐसा कह रहे थे।' तब उसके पति ने मुझसे क्या कहा? 'मैं उस आदमी से यह सब कह रहा था, तो इसने वहाँ मेरी इज़्ज़त बिगाड़ दी। इसने कह दिया कि 'ऐसा कुछ नहीं है। आप मानना मत।' मैं इज़्ज़त बना रहा था, मैं इज़्ज़त बढ़ा रहा था, जबकि इसने मेरी इज़्ज़त खत्म कर दी।' अरे, इसमें क्या इज़्ज़त बढ़नी थी? किसकी इज़्ज़त बढ़नी थी? यह क्या तूफान! यह मिथ्याभिमान है। किराए के घर में रहना और बड़ी-बड़ी बातें करनी!

अरे, कपड़े भी किराए पर ले आते हैं न, फिर? 'हमारे दो बंगले हैं और खेत तो बड़ा है, वो बगीचा है अंदर।' कोट इस्त्री वाला होता है, लेकिन वह किराए का। अपना कोट धोबी के वहाँ पर हो और धोबी उसे किराए पर दे दे। फिर किसी का पहना हुआ कोट वापस हमें पहनना पड़ता है। तो देख, यह दुनिया तो देख! और हम कहते हैं कि 'मैं किसी का पहना हुआ नहीं पहनता।' ऐसी दुनिया चलती है अंदर! मैंने देख लिया सभी कुछ। आप पहचान भी जाते हो, तब आपको मन में होता भी है कि 'यह व्यक्ति (मेरा) जो कोट पहनकर घूम रहा था।' 'यह कोट मेरे जैसा है और यहाँ पर दाग़ था, वही का वही दाग़ भी है यह।' लेकिन उस व्यक्ति से क्या कह सकते हैं हम? ऐसी यह दुनिया है।

अभिमान, स्व-प्रशंसा और गर्वरस

प्रश्नकर्ता : गर्व और अभिमान में कोई फर्क है?

दादाश्री : अभिमान और गर्व दोनों आमने-सामने तराजू में रखें तो कितना होगा? एक तरफ तराजू में गर्व रखें और दूसरी तरफ अभिमान रखें तो क्या होगा? क्या एक समान वज़न होगा? अभिमान एक पाउन्ड होगा और गर्व चालीस पाउन्ड होगा।

प्रश्नकर्ता : किस तरह से, वह समझाइए।

दादाश्री : ऐसा है, लोग तो अभिमान को नहीं समझते, गर्व को नहीं समझते। गर्व का मतलब अभिमान नहीं है। अभिमान शब्द अलग है, गर्व अलग, अहंकार भी अलग।

प्रश्नकर्ता : तो गर्व अर्थात् मैं पद?

दादाश्री : नहीं। मैं पद का मतलब अहंकार है। 'मैं चंदूभाई हूँ' वह अहंकार है। शायद आपमें अभिमान नहीं भी हो, गर्व भी नहीं हो, जहाँ खुद नहीं है वहाँ 'मैं हूँ' ऐसा मानना, वह है मैं पद। जो स्व-पद को चूक गए हैं, वे मैं पद में होते हैं, लेकिन गर्व क्या है? गर्वरस तो बहुत गाढ़ होता है। अभिमान तो भोला रस है बेचारा, पाव एक पाउन्ड! जबकि गर्वरस तो है चालीस पाउन्ड!

प्रश्नकर्ता : ज़रा गर्व रस का उदाहरण देकर समझाइए।

दादाश्री : अभिमान में वह ऐसा नहीं जानता कि 'इन सब का कर्ता मैं हूँ' और गर्वरस तो 'मैं कर्ता हूँ' ऐसा मानता है। यानी कि एक का कर्ता अर्थात् पूरे ब्रह्मांड का कर्ता भी मैं हूँ ऐसा मानता है। अतः गर्वरस तो बहुत आगे तक पहुँचता है। गर्व करता होगा कोई? अरे! सभी बातों में गर्व होता है। 'मैं करता हूँ' इसका भान, वह सब गर्वरस कहलाता है।

जब कृपालुदेव का यह भान चला गया कि 'मैं करता हूँ,' तब यथार्थ समकित हुआ, तब उन्होंने क्या कहा कि '*मट्यो उदयकर्म नो गर्व रे!*' (मिटा उदयकर्म का गर्व रे!) पूरा जगत् उदयकर्म में गर्व रखता है। उसमें कोई भी अपवाद नहीं है। क्योंकि, जब तक खुद 'स्वरूप' नहीं हो जाता तब तक दूसरी जगह पर है और दूसरी जगह पर है इसलिए गर्व हुए बिना नहीं रहता।

'इगोइज़म' किसलिए घुसा है? अज्ञानता के कारण। किसकी अज्ञानता? यह सब कौन करता है, उसकी अज्ञानता है। इसलिए नरसिंह मेहता क्या कहते हैं? *''हूँ करूँ, हूँ करूँ ए ज अज्ञानता, शकटनो भार ज्यम श्वान ताणे, सृष्टि मंडाण छे सर्व ऐणी पेरे, जोगी जोगेश्वरा कोक जाणे।''*

क्या गलत कह रहे हैं यह नरसिंह मेहता? जबकि कई लोग कहते हैं कि, 'मैंने यह किया, मैंने स्वाध्याय किया, मैंने तप किया, मैंने जप किया' तो कौन सी बात सही है? इसलिए 'मैं करता हूँ, मैं करता हूँ' यह अज्ञानता है। कैसे प्राप्ति करेगा मनुष्य? और गर्व क्या है? कि जहाँ खुद नहीं करता है वहाँ पर कहता है, 'मैंने किया', वह गर्व है। खुद करता नहीं है, 'इट हैपन्स' (स्व-परिणामी) है। इसके बजाय क्या कहते हैं लोग?

प्रश्नकर्ता : मैंने किया।

दादाश्री : वह गर्व कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहते हैं कि ज्ञान का भी गर्व आ जाता है।

दादाश्री : ज्ञान का गर्व तो हम चला भी

लेते हैं कि अच्छी बात का गर्व है लेकिन यह तो, अज्ञानता का भी गर्व है।

प्रश्नकर्ता : और गर्व का उपयोग अच्छे अर्थ में भी होता है न, कि यह गर्व करने जैसी बात है।

दादाश्री : उसका फिर अच्छे अर्थ में भी उपयोग होता है लेकिन जगत् में मूल गर्व यहाँ पर है। वे फिर उसे अच्छे अर्थ में ले गए।

प्रश्नकर्ता : और खुद ने कुछ अच्छा कार्य किया हो तो खुद औरों से कहता भी है, दस लोगों को कह आता है कि, 'मैंने ऐसा किया, ऐसा किया।' ऐसे कह दे तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : हाँ, लेकिन कहेगा तभी उसे गर्वरस होगा न! गर्वरस उसे कहते हैं कि जब औरों से कहने पर गर्वरस उत्पन्न होता है। तब उसे मज़ा आता है और कोई सो गया हो न, तो थोड़ी देर बाद उसे उठाकर कहता है, तभी छोड़ता है!

प्रश्नकर्ता : स्व-प्रशंसा और गर्वरस किसे कहते हैं? और उसे चखने की आदत का कारण क्या है? उसे टालने का उपाय क्या है?

दादाश्री : स्व-प्रशंसा अर्थात् कोई कहे कि, 'तू बहुत समझदार है, और तू बहुत लायक इंसान है, और तेरे जैसा इंसान कहाँ से मिलेगा!' वह स्व-प्रशंसा! ऐसा कहने पर फिर बाकी सबकुछ भूल जाता है। आपको पूरा दिन काम करवाना हो तो वह करता भी है।

और गर्वरस अर्थात् 'मैंने कितना अच्छा किया, कैसे यह किया।' जो भी काम किया हो न, वह 'कितना अच्छा है' यों उसका रस चखता है, वह गर्वरस!

गर्वरस चखने की आदत का कारण क्या है? बस, उसके पीछे अहंकार है, 'इगोइज़म' है कि 'मैं कुछ हूँ।'

गर्व अर्थात् 'जहाँ खुद नहीं करता है' वहाँ पर ऐसा मानना कि 'करता है'। उस समय रस उत्पन्न होता है अंदर, गर्वरस उत्पन्न होता है। वह बहुत मीठा लगता है, इसलिए उसे मज़ा आता है कि 'मैंने किया'!

प्रश्नकर्ता : और वातावरण भी ऐसा है कि निमित्त को पकड़ लेता है। हार पहनाकर सम्मान करते हैं, मानपत्र देते हैं कि 'आपने ही किया।'

दादाश्री : हाँ, 'आपने ही किया, आपने ही किया' करके चिपट पड़ते हैं।

किसी का अच्छा किया न, उसका गर्व लेता है। फिर खराब किया, उसका भी गर्व लेता है। यानी कि अच्छे-अच्छों को मार डाला है, उसका गर्व लेता है। अच्छे-अच्छों को मैंने धनवान बना दिया है, पैसे वाला बना दिया है, ऐसा गर्व लेता है। वह स्वमान नहीं कहलाता। अभिमान नहीं कहलाता।

किसी जगह पर पान नहीं मिलता और कोई पान ले आए तो दो-तीन बार गा उठता है, 'किसी जगह पर नहीं मिल रहा था, हं!' यह गर्वरस। 'मैं था तो ले आया, नहीं तो ठिकाना ही नहीं पड़ता' कहेगा। ऐसे गर्वरस चखता है। बहुत मज़ा आता है।

प्रश्नकर्ता : गर्व लेना तो गलत ही कहलाता है न!

दादाश्री : गर्व से संसार खड़ा है। संसार का बीज गर्व ही है, अहंकार नहीं।

प्रश्नकर्ता : गर्व, वह बीज है। वह किस तरह से?

दादाश्री : अहंकार में स्वाद नहीं होता। यानी कि अहंकार बेस्वाद है और यह गर्वरस स्वादिष्ट है, बहुत ही स्वादिष्ट! मान-अभिमान भी स्वादिष्ट है, लेकिन गर्व जितना नहीं। गर्व जितनी स्वादिष्ट तो कोई भी चीज़ नहीं है।

यानी हम लोग वास्तव में कर्ता नहीं है। कर्ता दूसरी ही चीज़ है। हम आरोप करते हैं, आरोपित भाव करते हैं कि 'मैं कर रहा हूँ यह।' उसका गर्वरस चखने को मिलता है। ऐसा गर्वरस तो बहुत मीठा लगता है वापस और उसी से कर्म बंधते हैं। गर्वरस चखा, आरोपित भाव किया कि कर्म बंधा।

मान के पर्याय अनेक

मान के सभी शब्द तो बहुत पर्यायों में हैं, इतने सारे पर्याय हैं।

प्रश्नकर्ता : *तुंडमिज़ाजी*, घमंड, ये सभी कहलाते हैं?

दादाश्री : हाँ, वे तो तरह-तरह के ऐसे सब शब्द हैं। लोग तो गर्व और *गारवता* (सांसारिक सुख की ठंडक में पड़े रहना), वगैरह सब खुद की ही भाषा से समझते हैं न! अभिमान को गर्व कहते हैं ऐसे हैं लोग। अहंकार किसे कहना है, अभिमान किसे कहना है, मान किसे कहना है, गर्व किसे कहना है, *तुमाखी* वाला किसे कहना है?

प्रश्नकर्ता : खुमारी वाला किसे कहना है?

दादाश्री : खुमारी वाला, वे सब तरह-तरह के अभिमान हैं न! फिर कौन सा शब्द? घमंडी! घमंड तो उसमें कुछ भी काबिलियत नहीं हो और कहेगा, 'अरे, वकील के बाप को हरा दूँ।' इसलिए फिर हम समझ जाते हैं कि घमंडी है यह। तरह-तरह के लोग हैं सभी, माल सभी तरह का! फिर मच्छराल है, ऐसा कहते हैं कि और इनमें *धेमराजी* बहुत है, ऐसा भी कहते हैं। तो इन सब में 'डिफरेन्स' है, उसी वजह से अलग-अलग नाम रखे हैं। मच्छराल तो ज़रा मच्छर जैसा ही होता है। काट खाए वह तो जलन होती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ये सब अभिमान, घमंड, वे सब तो मनुष्य में कुछ उम्र हो जाने पर ही आते हैं न? बच्चों में ज़्यादातर ऐसा कुछ नहीं होता।

दादाश्री : बच्चों में बिल्कुल ही नहीं होता। जैसे-जैसे बुद्धि बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे यह सारा तूफान बढ़ता जाता है।

प्रश्नकर्ता : फिर तुंडमिज़ाजी है न? उसकी 'डेफिनेशन' क्या है?

दादाश्री : तुंडमिज़ाज! नाम मात्र की समझ नहीं, ना ही लक्ष्मी का ठिकाना, तब भी बेहद मिजाज़। शादी करने को नहीं मिल रही हो फिर भी मिज़ाज! अरे, शादी करने को नहीं मिल रही फिर भी किस चीज़ का मिज़ाज करता रहता है वह? वह तुंडमिज़ाज कहलाता है न, फिर।

और फिर, *तुमाखी* वाला। वह आज से पचहतर साल पहले कलेक्टर, पुलिस, डी.एस.पी.ओ, उन सभी को *तुमाखी* थी, जैसे भगवान ही हो इतनी *तुमाखी* रखते थे। बड़े-बड़े सेठों को मारते-पीटते, सेठों को हंटर से मारते थे। इतनी *तुमाखी*, *तुमाखी*! अभी कुछ ही समय पहले देखा है मैंने यह सब। हमारा काम कॉन्ट्रैक्ट का है न, इसलिए सभी ऑफिसरों के पास जाना पड़ता था, इसलिए *तुमाखी* वालों को देखा था वहाँ पर। ट्रेन में कलेक्टर के सामने फर्स्ट क्लास में नहीं बैठ सकते थे। यों ईमानदार थे। अनुशासन से बाहर नहीं चलते थे लेकिन फिर *तुमाखी* बेहद थी। कैसी *तुमाखी*! लोगों को दुतकार-दुतकार कर रख देते थे। हमारे काम पर

एग्जीक्यूटिव इंजीनियर आते थे न, तो हंगामा मचा देते थे और जैसा चाहें उस अनुसार कर देते थे। क्योंकि पावर है न, उनके पास।

हमने देखी थी यह सारी *तुमाखी*। तो मुझे अभी हँसना आता है, इन बड़े-बड़े कलेक्टरों को देखकर। पहले कैसी *तुमाखी* रखते थे, जैसे भगवान आ गए हों, वैसी और अभी तो कलेक्टर चप्पल पहनकर निकले और उसके पैर पर अपना बूट पड़े तो 'प्लीज़, प्लीज़' करता है। पहले तो यदि ऐसा हो जाता न, तो हंटर से मारते थे। वह भी वहीं स्टेशन पर ही मारते। जबकि अब तो 'प्लीज़, प्लीज़' करते हैं। ये मार खा-खाकर ऐसे सीधे हो गए हैं! *तुमाखी* सारी उतर गई न! गाड़ी में बड़ा कलेक्टर होता था, तब भी कुछ बोल नहीं सकते थे न! और गवर्नर हो तब भी नहीं बोल सकते थे। लेकिन देखो मार खा-खाकर सीधे हो गए! और अब तो कहते हैं, 'हाँ, चलेगा।' पत्नी से भी क्या कहते हैं? 'हाँ, हाँ, चलेगा, चलेगा।' पहले तो ऐसा नहीं कहते थे कि 'चलेगा,' और अब?

ये सब देखो न, एकदम ठंडा हो गया! और अभी तो अगर लोग बड़े आदमियों की भी बुराई करें, तब भी कुछ नहीं। देखो बिल्कुल शांत हो गए न! सीधे हो गए या नहीं हो गए? सीधे हो गए हैं न, और बाकी के मार खा-खाकर अभी और भी सीधे हो जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : फिर आगे, *घेमराजी* कैसा होता है? *घेमराजी* अर्थात् घमंड?

दादाश्री : नहीं। वह घमंडी भी अलग है, *घेमराजी* भी अलग है। ये लोग तो बहुत पक्के लोग हैं। यहाँ तक घमंड और इससे अधिक करे तो *घेमराजी*। तीव्रता में बदलाव होते ही तुरंत अलग नाम दे देते हैं। ये तो बहुत पक्के लोग हैं। *घेमराजी* यानी यहाँ से तीन मील दूर तक भी न जा पाए, ऐसा शरीर हो, और फिर कहेगा 'पूरी दुनिया घूम आऊँ।' लोग *घेमराजी* रखकर घूमते रहते हैं बेकार ही। 'दिमाग़ में *घेमराजी* रखकर घूमता रहता है, बस इतना ही है।' कहते हैं न? यानी वह *घेमराजी* रखता है। फिर लोग भी कहते हैं, इज़्ज़त उतार देते हैं कि 'बिना बात की *घेमराजी* रखता है, देखो तो सही!' लोग छोड़ेंगे क्या? कोई घमंड रखे, तो उसे छोड़ते नहीं हैं। *घेमराजी* रखे तो छोड़ते नहीं है। जो ऐसा सब रखता है, उसे छोड़ते नहीं हैं, कह देते हैं। कहेंगे, 'घमंड रखता है यह।' 'अभिमान करता है, मानी है।' सबकुछ कह देते हैं लोग तो।

घेमराजी यानी क्या? 'हट, हट, हट। तू जा घर, हट हट।' सभी को 'हट, हट' करते रहते हैं। अरे, सीधा रह न! मुझे बैठने तो दे लेकिन तब कहता है, 'हट, हट।' यानी वह दूसरे लोगों को कुछ समझता ही नहीं, उसे सभी जानवर जैसे लगते हैं। इंसान भी जानवर जैसे लगते हैं। बोलो अब, यह *घेमराजी!* यह कौन सी भाषा का शब्द लगता है आपको? पर्शियन भाषा का शब्द है?

प्रश्नकर्ता : यह देशी शैली में, चरोतरिया भाषा का है।

दादाश्री : हाँ, चरोतरी भाषा! कहेंगे, '*घेमराजी* बहुत है। पास में कुछ है नहीं और *घेमराजी* बहुत है।' *घेमराजी* शब्द भी अपनी गुजराती में है न! अब यह शब्द कहाँ से उत्पन्न हुआ, उसका 'रूट कॉज़,' मैंने ढूँढा लेकिन मिला ही नहीं कुछ! अभिमान वगैरह सब का 'रूट कॉज़' मिलता है।

प्रश्नकर्ता : यानी कि शब्द जितने सीधे दिखाई देते हैं उतने होते नहीं हैं, अंदर बहुत रहस्य होता है।

दादाश्री : हाँ, निरे अर्थ से ही भरे हुए हैं ये शब्द सारे। उसका *ऊपरी* अर्थ नहीं करना है। उसमें परमार्थ है अंदर लेकिन कितने ही आवरण जाएँ, तब जाकर परमार्थ प्राप्त होता है।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा है, 'अहंकार बहुत ही था।' तो उस वजह से अहंकार के ये सभी 'फेज़िज़' अनुभव में आ गए न?

दादाश्री : हाँ, सभी तरफ का अनुभव! उसके 'परस्पेक्टिव व्यू' भी देख लिए हैं। 'परस्पेक्टिव' अहंकार कैसा दिखाई देता है, वह ऐसे पता चलता है।

उन्मत्तता का रोग

लोग तो कैसा अहंकार करते हैं? यहाँ से ऐसे जा रहा हो न, तब सीधा 'स्ट्रेट फॉरवर्ड' जा रहा हो, ऐसे सहजता से चल रहा होता है, और जब वापस आता है, उस घड़ी हमें लगता है कि इसमें क्यों बदलाव हो गया लगता है? 'फेस' बदला हुआ लगता है हमें। लौटते हुए रौब से आता है। तब हम जान जाते हैं कि यह कुछ बदलाव हुआ है, इसे 'इफेक्ट' है कोई।

तब हम उसे कहें कि, 'आओ-आओ, ज़रा चाय पीकर जाओ।' तो हम उसका पता लगाने के लिए चाय पिलाते हैं, उसके रौब के कारण नहीं पिलाते। जबकि वह मानता है कि उसके रौब के कारण चाय पिला रहे हैं। हम चाय पिलाकर फिर पूछें कि, 'किस तरफ गए थे?' तब वह कहता है, 'वे पाँच हज़ार रुपये लेने थे न, वह ले आया।'

जेब में पाँच हज़ार आए, तो वापस यह चढ़ा! उन्मत्त हो जाता है। उसमें रोग घुसा है यह, उन्मत्तता का रोग! यानी कि बैंगन हो गया फिर से 'टाइट'! वर्ना 'ऐसा' हो जाता है बैंगन।

बोलो अब, वह पाँच हज़ार यदि इंसान को 'टाइट' कर देता है, इंसान उन्मत्त हो जाता है, तो हमें तो, 'ज्ञानी पुरुष' को तो संपूर्ण भगवान ही वश में हो चुके हैं! बोलो, हम में कितना 'टाइट' रहना चाहिए? लेकिन फिर भी उन्मत्तता नहीं है ज़रा भी। यह आश्चर्य ही है न! पाँच हज़ार यदि इतना 'टाइट' करे, तो भगवान-पूरा तीन लोक के नाथ, जिनके वश में रहते हों, वे कैसे 'टाइट' होंगे?! लेकिन नहीं, वास्तव में लघुता वहीं पर होती है! हम तो छोटे बालक जैसे हैं।

मान नापने का थर्मामीटर

प्रश्नकर्ता : बाहर के 'मटीरियल्स' के मान के अलावा भी मान होता है न? इन साधु, संन्यासियों के पास कोई मटीरियल्स नहीं होते, फिर भी उनमें मान तो ज़बरदस्त होता है। वह कौन सा मान?

दादाश्री : उनमें जो मान है वह, 'कोई पुस्तक-शास्त्र जानता हूँ,' उसका होता है। यह भी एक प्रकार की जायदाद ही कहलाती है न! 'मैं शास्त्र वगैरह जानता हूँ,' वह जायदाद ही कहलाती है न! वे सभी 'मटीरियल्स' ही कहलाते हैं। वह सब मान ही होता है।

प्रश्नकर्ता : और ऐसा भी होता है कि कोई कुछ भी नहीं जानता, फिर भी उसे बहुत मान रहता है।

दादाश्री : हाँ, ऐसा होता है। क्योंकि, वह मान बैठा है न! कोई भी व्यक्ति मान दे तो वह उसे स्वीकार नहीं करे, मन से स्वीकार नहीं करे तो फिर उसका पारा नहीं चढ़ता। यानी वह अपने आप मान बैठा है कि 'अब मुझमें मान नहीं रहा।' क्योंकि जब दूसरे लोग मान दें तो उस पर बहुत असर नहीं होता, अंदर खुद उसे स्वीकार नहीं

करता और वह वर्तन ऐसा रखता है कि दूसरे लोगों को बुरा नहीं लगता। मन ही मन में वह जानता है कि मेरा पारा नहीं चढ़ता, इसलिए अब मान नहीं रहा। नहीं तो पारा चढ़ ही जाता है न? लोगों ने 'ऐसा' किया और खुद ने स्वीकार किया, तो फिर पारा चढ़ ही गया न!

अब वह स्वीकार नहीं करता इसलिए पारा नहीं चढ़ता। लेकिन फिर मैंने कहा, 'आपमें मान नहीं रहा न? तो अब थर्मामीटर रखो कि भई, बुखार चढ़ा या उतरा?' तब वह कहता है, 'वह थर्मामीटर क्या?' मैंने कहा, ''अभी पंद्रह-बीस रिश्तेदार बैठे हों और कोई आपसे कहे कि 'आपमें बिल्कुल भी अक्ल नहीं है,' तो असर हो जाएगा न!'' अरे, कहाँ गया? तेरा मान नहीं था न? अपमान जैसा कोई मान नहीं है। उस मान की तो कीमत ही नहीं है। लेकिन अपमान जैसा कोई मान नहीं है। जिससे अपमान सहन नहीं होता, वही बड़ा मानी है। लोगों का दिया हुआ मान तो सहन हो सकता है, जबकि अपमान सहन नहीं होता। वह सब से बड़ा मान है। वह बड़ा मानी कहलाता है।

निर्मानी : निर्‌अहंकारी : निर्मोही

अरे, आजकल तो कई साधु निर्मानी होकर घूमते हैं। वह नहीं चलेगा। निर्मानी देखे हैं क्या आपने? निर्मानी अर्थात् जो निर्‌अहंकारी कहलाते हैं न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, निर्‌अहंकारी।

दादाश्री : अरे, ऐसा बोलना मत! निर्मानी में निर्मानी अहंकार होता है, 'मैं निर्मानी हूँ' ऐसा अहंकार होता है और मानी लोगों में मानी अहंकार होता है। मानी का अहंकार अच्छा है लेकिन निर्मानी का अहंकार तो कौन से जन्म में धोओगे? निर्मानीपना तो सूक्ष्म अहंकार है, एक बार घुसने के बाद फिर वह निकलता नहीं है कभी भी। 'मैं निर्मानी हूँ, मैं निर्मानी हूँ। हम निर्मानी हैं' कहेंगे। यों निर्मानी बन बैठा है। उसके पीछे सूक्ष्म अहंकार है। इसके बजाय तो स्थूल अच्छा कि लोग कह देते हैं कि 'अरे, आपका इतना पावर है, इसलिए यह छाती फुलाकर घूम रहे हो क्या?' ऐसा कहते हैं या नहीं? जबकि इसे तो कोई कहने वाला ही नहीं मिलता न। कोई डाँटने वाला ही नहीं मिलता न! वह फिर बढ़ता ही जाता है दिनोंदिन इसलिए मुझे मुँह पर कहना पड़ता है कि 'ज़रा समझो, नहीं तो भटक मरोगे। निर्‌अहंकारी बनना पड़ेगा। निर्मानीपना नहीं चलेगा।' आप समझ गए न, कि निर्मानी क्या है?

आपको 'ज्ञान' देते हैं, तब निर्‌अहंकारी बन जाते हो। निर्मानी (पना) तो बहुत बड़ा अहंकार है। वह बला बहुत बड़ी है! यह मान की बला तो अच्छी। यह बला भोली है। कोई कह भी देगा कि, 'अरे, छाती क्यों फुला रहे हो इतनी?' कहता है या नहीं कहता? अरे, आप ही उसे कहो न कि, 'मैं काम करता हूँ फिर भी यों बगैर छाती फुलाए घूमता हूँ तो आप क्यों छाती फुला रहे हो?' लेकिन निर्मानी को तो कोई कहने वाला ही नहीं न! मान-वान कुछ भी नहीं। निर्मानीपना तो सूक्ष्म अहंकार है, यानी क्या? कि ऊपर के सींग काट दिए लेकिन अंदर के सींग बाकी बच गए। अंदर के सींग भी नहीं चलेंगे और ऊपर के सींग भी नहीं चलेंगे! अंदर के सींग अंदर की चुभन उत्पन्न करते हैं और बाहर तो चुभन नहीं होती है न, उन्हें। उन सब को साफ-सूफ कर देते हैं, नौकर-चाकर होते हैं, वे मक्खी-मच्छर निकाल देते हैं। उससे फिर बाहर काटता नहीं है कुछ भी लेकिन अंदर की चुभन कैसे छोड़ेगी

आपको? अंदर की चुभन ही तो वास्तव में चुभन है। आपने देखी है या नहीं देखी अंदर की चुभन?

प्रश्नकर्ता : देखी है, अनुभव की है।

दादाश्री : अत: निर्अहंकार बनना पड़ेगा, निर्मानीपना नहीं चलेगा।

प्रश्नकर्ता : वह तो दादा, एक दूसरा शब्द है, पर्याय की तरह, निर्मोही।

दादाश्री : निर्मोही शब्द 'फुल' (पूर्ण) है ही नहीं। निर्मोही यानी संपूर्ण मोह रहित, ऐसा नहीं है। निर्मोही, वह संपूर्ण मोह रहित व्यक्ति के लिए नहीं कहा जा सकता। जिसका मोह क्षय हो गया है, उसे निर्मोही नहीं कह सकते। यानी कि निर्मोही, वह मोह-क्षय दशा नहीं है। सिर्फ अनासक्त शब्द ही चलाया जा सकता है, निर्मोही नहीं। निर्मोही कब तक? अहंकार करके जिसने मोह दूर किया है, उसे निर्मोही कहते हैं। अहंकार करके जिसने मान दूर किया, उसे निर्मानी कहते हैं। यानी अहंकार तो खुद है ही, और बाकी का सब कम किया। किसी ने गाली दी तो कहेगा 'मुझे क्या लेना-देना?' लेकिन वही का वही अहंकार तो खड़ा ही रहा। निर्मोहीपने का अहंकार रहा, निर्मानीपने का अहंकार रहा। वह अहंकार भी अंत में निकालना तो पड़ेगा न?

मानी के अहंकार को तो 'ज्ञानी' खत्म कर देते हैं लेकिन निर्मानी का अहंकार तो भगवान से भी खत्म नहीं हो सकता, ऐसा सूक्ष्म अहंकार है। वह सूक्ष्म अहंकार उत्पन्न हो गया तो मारे जाओगे इसलिए किसी से पूछकर करना।

निस्पृही अहंकार

ये जो साधु बाबा हैं, वे सभी निस्पृह हैं, बिल्कुल भी स्पृहा नहीं। 'हमकु क्या? हमकु कुछ नहीं चाहिए।' तो कोई दूध ले आए न, तब वह क्या मानता है कि, 'बाप जी राज़ी हो जाएँगे, चलो न। कभी काम आएँगे। मेरे बेटे के यहाँ बेटा नहीं है।' तब बाप जी क्या कहेंगे, 'हम को कुछ नहीं चाहिए, चले जाओ इधर से। क्यों आया?' और इतनी-इतनी गालियाँ भी देता है। लेकिन लोग लालची हैं, इसलिए इन लोगों की गाड़ी चलती रहती है और 'व्यवस्थित' का नियम है। किसी भी तरह से उसे खाने-पीने का, वह गालियाँ दे, फिर भी भक्त उसे दे जाते हैं। वह जीवित तो रहता है न! 'व्यवस्थित' का नियम है, खाने का पहुँचाए बगैर नहीं रहता। अरे, अंत में ऐसा भी कहता है, 'बाबा जी का दिमाग़ ऐसा है, लेकिन दो उसे।' गालियाँ खाकर भी दे आता है। अब यह जो कहते हैं, 'हमकु कुछ नहीं चाहिए।' यह भी स्पृहा ही कहलाती है। यह भी एक तरह का अहंकार है, निस्पृही!

जो निस्पृह हो गए हैं, वे 'हमकु क्या, हमकु क्या' करते रहते हैं। तो वे भी भटक मरे और सभी को भटका मारा और 'ज्ञानी पुरुष' कैसे होते हैं? आपके आत्मा प्रति स्पृहा वाले होते हैं, और बाहर आपका जो भौतिक में है उसके निस्पृही। भौतिक में किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं होती, और उनके आत्मा का किस तरह कल्याण हो उतनी ही स्पृहा होती है। हाँ, संपूर्ण निस्पृह नहीं होते। यानी हम 'ज्ञानी पुरुष' निस्पृह-सस्पृह हैं। इसका क्या मतलब है? यह किनारा भी हमारा नहीं है और वह किनारा भी हमारा नहीं है। हम तेरे *पुद्गल* में निस्पृह हैं और तेरे आत्मा के लिए सस्पृह हैं। तू अगर हमें गालियाँ देगा फिर भी हम तेरे प्रति स्पृहा रखेंगे। उसका क्या कारण है? कि तेरे आत्मा के लिए सस्पृह हैं। वह यदि टेढ़ा करे न, वह अपमान करे न, फिर भी हम उस बेचारे का रक्षण करेंगे। आपकी समझ में आया न?

अहंकार ने रोका हुआ है, आत्म प्रकाश

प्रश्नकर्ता : हमारी सभी शक्तियों पर आवरण आने का मुख्य कारण अहंकार ही है?

दादाश्री : अहंकार की वजह से ही सभी शक्तियाँ व्यर्थ खर्च हो गई हैं न! वह हमेशा अंधा ही होता है। अब, फिर अहंकार के भाग करें, उसके डिविज़न करें कि भाई, यह अहंकार तो किस विषय में? इसे लोभ में अहंकार ज़्यादा है, इसे मान में अहंकार ज़्यादा है, इस तरह के सारे अहंकार। अत: यह अहंकार ही रोकता है, क्या आपको ऐसा लगता है?

प्रश्नकर्ता : अहंकार की वजह से ही टक्कर होती है?

दादाश्री : यह सारी झंझट ही अहंकार की है। अब, ऐसा कहे कि दादा, आप तो बहुत सोचते हैं। तब कहें नहीं, हमारा अहंकार शून्य हो गया है न! यह आप जो कहना चाहते हो न, बाद में बुद्धिशाली ऐसा ही कहेंगे। क्योंकि ऐसा कैसे हो सकता है यह! अरे, उसमें कुछ भी नहीं करना पड़ा है। इस वह अहंकार शून्य करने की ज़रूरत है। वर्ना, इतना सब यह मैं कैसे कर सकता हूँ? पूरे ब्रह्मांड के बारे में मैंने सोचा है, इतनी सारी बातें इंसान कैसे सोच सकता है?

प्रश्नकर्ता : वह तो और अधिक उलझ जाता है, दादा?

दादाश्री : बल्कि ज़्यादा उलझ जाता है। यह जो आत्मा का प्रकाश है, वह आपके काम आता है। बीच में यह इगोइज़म है। इगोइज़म की जो डिज़ाइन है, उस डिज़ाइन थ्रू (द्वारा) प्रकाश आता है। इगोइज़म की डिज़ाइन कुछ लोगों में यों होती है, कुछ लोगों में यों होती है। कुछ लोगों में यों होती है, वह ऐसी डिज़ाइन थ्रू होकर आता है। लेकिन यदि इगोइज़म खत्म हो गया हो तो? सीधा, डायरेक्ट ही लाइट आता है न!

ज्ञान के बाद हैं निकाली, अहंकार के परिणाम

इस 'ज्ञान' के बाद आपमें अब अहंकार है ही नहीं। क्योंकि अहंकार किसे कहते हैं? 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा तय करना, वह है अहंकार! और आपको 'मैं चंदूभाई हूँ' उस ज्ञान पर शंका हुई। 'मैं चंदूभाई नहीं हूँ' और 'मैं तो शुद्धात्मा हूँ,' इसलिए अब आपमें अहंकार है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : अहंकार अर्थात् 'मैं चंदूभाई हूँ' उस भाग को ही कह रहे हैं न?

दादाश्री : हाँ, वही अहंकार कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : वह अहंकार भाग तो निकल गया है लेकिन क्या अब हमारा अभिमान रह गया है?

दादाश्री : हाँ, अभिमान में हर्ज नहीं है। अभिमान *निकाली* चीज़ है। आपमें अहंकार रहा ही नहीं न! अभिमान में हर्ज नहीं है। मान और अभिमान, वे *निकाली* चीज़ हैं। फिर उससे आगे गर्व और बाकी सब सामान रहा हुआ है न! मूल अहंकार गया लेकिन अहंकार के जो परिणाम थे, वे तो रहे ही हैं न! मूल रूट कॉज़ गया लेकिन ऊपर की जो डालियाँ वगैरह बची हैं, वे सूख जाएँगी।

प्रश्नकर्ता : यानी अभिमान है, वह पुराने अहंकार का ही परिणाम है?

दादाश्री : हाँ। अभिमान, अहंकार का ही परिणाम है। वह परिणाम रह गए और 'रूट कॉज़' (मूल कारण) चला गया। अहंकार गया! और जब अहंकार के सभी परिणाम चले जाते हैं, तब केवलज्ञान होता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अगर अहंकार का परिणाम अभिमान है, तो अभिमान जाने पर तो केवलज्ञान हो जाता है न?

दादाश्री : नहीं। परिणाम में सिर्फ अभिमान नहीं है। अहंकार के परिणाम में तो और भी बहुत कुछ है। वे सभी चले जाते हैं, तब केवलज्ञान होता है!

प्रश्नकर्ता : तो अहंकार के परिणाम कौन-कौन से हैं?

दादाश्री : बहुत! कई तरह के परिणाम हैं।

प्रश्नकर्ता : हमारे इस अभिमान से किसी को तकलीफ न हो, संताप न हो, बल्कि उसके बजाय सामने वाले को सुख हो, उसके लिए हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : सिर्फ इतना भाव ही करना है। और कुछ नहीं करना है। 'अपने अभिमान से किसी को दु:ख न हो और सुख ही हो,' ऐसा भाव करना है। फिर दु:ख हो जाए तो प्रतिक्रमण करने हैं और आगे बढ़ते जाना है। तब और क्या करें फिर? हमें क्या पूरी रात वहीं बैठे रहना है? फिर ऐसा नहीं है कि बैठे रह सकें। हमें बैठे रहना हो फिर भी बैठा नहीं पाएँ, तो क्या करना चाहिए?

फिर भी, हमें उस तरह से कदम उठाने चाहिए कि लोगों को दु:ख न हो।

प्रश्नकर्ता : उस हिसाब से तो पूरा संसार अहंकार का ही परिणाम है, 'मैं चंदूभाई हूँ' पूरा संसार उसी का परिणाम है न?

दादाश्री : लेकिन अब इस 'ज्ञान' के बाद आपका यह अहंकार गया। यदि वापस अहंकार रहता तो परिणाम उत्पन्न होते रहते न! इस 'ज्ञान' के बाद तो नए परिणाम उत्पन्न ही नहीं होते न! और पुराने परिणाम खत्म ही होते जाते हैं, सिर्फ पुराने ही खत्म हो जाएँगे। तब फिर हल आ गया। यह टंकी नई नहीं भरती है। किसी की टंकी पचास गेलन की होती है और किसी की पच्चीस लाख गेलन की होती है। बड़ी टंकी हो तो देर लगती है लेकिन जिसकी खाली होने लगी है, उसे क्या!

प्रश्नकर्ता : लेकिन टंकी खाली होते-होते तो फिर वह बाढ़ की तरह किसी को लुढ़का देता है, किसी से टकरा जाता है और किसी को मार देता है न!

दादाश्री : हाँ, वह सब तो, जो मारता है न, वह तो उसके परिणाम हैं न! उससे हमें क्या लेना-देना? लेकिन किसी को दु:ख हो जाए तो उसका प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए।

देहाभिमान, पहुँचा शून्यता तक

अभिमान करने जैसा तो हमें है कि पूरे ब्रह्मांड के *ऊपरी* (बॉस, वरिष्ठ) कहलाते हैं, फिर भी हमें तो छोटे बच्चे से भी कम अभिमान है। हममें तो अहंकार है ही नहीं न! अहंकार होगा तो यह सब मिलेगा ही नहीं न! जो इस देह का मालिक नहीं बनता, वह ब्रह्मांड का मालिक बन सकता है। जिन्हें देह का मालिकीपन, मन का मालिकीपन, और वाणी का मालिकीपन नहीं हो, वे ब्रह्मांड के मालिक बन जाते हैं!

प्रश्नकर्ता : लेकिन कई लोग कहते हैं कि कई बार ज्ञानी पुरुष में अभिमान दिखाई देता है। लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है?

दादाश्री : जहाँ अभिमान है, वह ज्ञान नहीं है और जहाँ ज्ञान है, वहाँ पर अभिमान नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान और अभिमान दोनों साथ में नहीं रह सकते, इसका मतलब यह हुआ न?

दादाश्री : ज्ञान और अभिमान दोनों कभी भी साथ में नहीं रह सकते। या तो अभिमान रहता है या ज्ञान! फिर भी अगर आप मुझे दो धौल लगाओ और मुझे अभिमान आए तो वह अज्ञान है मेरा और साफ दिखाई देगा कि ये ज्ञानी नहीं हैं।

हाँ, जब तक हमें 'ज्ञान' नहीं हुआ था, तब तक देहाभिमान नहीं गया था। बल्कि पाव सेर था न, वह सवा सेर हुआ था। जन्म हुआ तब पाव सेर था, फिर जैसे-जैसे बड़ा हुआ वैसे-वैसे सवा सेर होता गया। पाव सेर था, वह भी काटता था तो क्या सवा सेर नहीं काटता होगा? अब अभिमान उसे कहते हैं जो काटता रहे। अहंकार वह है जिसमें अंतरदाह होता रहे। सिर्फ अंतरदाह ही होता रहे तो वह अहंकार कहलाता है जबकि यह अभिमान तो काटता रहता है।

तो हम अहंकार में नहीं लेकिन अभिमान में आ गए थे। अरे, तुंडमिज़ाजी भी हो गए थे। फिर कुछ लोग ऐसा भी कहते थे कि 'बहुत *घेमराजी* है' क्योंकि हमें ज्ञान नहीं हुआ था तब भी पूर्व (जन्मों) का सामान सारा इतना ऊँचा मिला था, इसलिए मुझे ऐसा ज़रूर था कि 'अपने पास कुछ है।' इतना ज़रूर पता था और उसकी ज़रा *घेमराजी* रहा करती थी।

यानी अहंकार कहाँ होना चाहिए, अभिमान कहाँ होना चाहिए, यह सब कहाँ होना चाहिए, वह सब मेरे *लक्ष* (जागृति) में है। अब आज अहंकारी पुरुष तो एक भी नहीं मिलता है। विकृत तो हो ही चुका है, अभिमान तक तो पहुँच ही चुका होता है।

अहंकारी पुरुष, वह तो साहजिक कहलाता है। वह सहज अहंकार है और वैसे अहंकारी होते ही नहीं हैं न इस काल में! कहाँ से लाएँ अहंकारी? आजकल तो अभिमानी होते हैं। अहंकार तो क्या है? कि 'मैं चंदूभाई हूँ' वही अहंकार है। लेकिन वह तो साहजिक चीज़ है। उसमें उसका गुनाह नहीं है और अभिमान क्या है? कि 'यह जो कारखाना है, वह हमारा है। यह अस्पताल भी अपना है,' यों अगर दिखाता ही रहता है तो हमें समझ जाना चाहिए कि यह कौन बोल रहा है? उनका अभिमान बोल रहा है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसमें आपने जो कहा कि देहाभिमान, पाव सेर से सवा सेर हो गया, तो फिर उसमें से शून्य किस तरह से हुआ?

दादाश्री : अचानक ही! मैंने तो इसमें कुछ भी नहीं किया। 'दिज़ इज़ बट नैचुरल' हो गया। इसीलिए मैं लोगों से कहता हूँ कि नकल करने जैसा नहीं है यह। 'नैचुरल' है, फिर इसमें तू क्या करेगा? अब मेरे पास आ, मैं तुझे रास्ता दिखाऊँगा। मुझे रास्ता मिल गया है। बाकी, मैं जिस रास्ते से गया हूँ, उस रास्ते से तू करने गया तो मारा जाएगा। क्योंकि मेरा तो पाव सेर के बदले सवा सेर हुआ तो मुझसे सहन नहीं हो रहा था। वे दिन कैसे निकाले वह तो मैं ही जानता हूँ।

प्रश्नकर्ता : वह कहा है न, 'देहाभिमान था पाव सेर, विद्या पढ़ने से बढ़ा सेर और गुरु बना तब मन (चालीस किलो) में गया।' अब उसमें से शून्य पर किस तरह आया जाए, वही महत्वपूर्ण है।

दादाश्री : अब इस 'ज्ञान' के बाद आपका पुरुषार्थ दिन-रात किस तरफ जा रहा है? शून्य

की ओर जा रहा है। पहले क्या होता था? कि मन से दो मन होता था, उस तरफ जाता था। अब शून्य की ओर जा रहे हो। उसके लिए अगर हम ऐसा कहें कि 'अब क्या उपाय है?' फिर भी उससे कुछ नहीं होगा। यानी अभी जो है, वह पद्धतिपूर्वक ही है। शून्य की ओर जा रहा है और वह हो ही जाएगा!

शुद्ध उपयोग से विलय होता है, अहंकार

प्रश्नकर्ता : हमारे अहंकार का जो स्वरूप है, उसे ज़ीरो पर लाने के लिए पुरुषार्थ का कौन सा बटन है?

दादाश्री : सिर्फ शुद्ध उपयोग। जितना शुद्ध उपयोग उतना ही अहंकार विलय होता जाता है। और यह ज्ञान देने के बाद इगोइज़म की दशा कैसी होती है? तब कहें, आज अगर बहुत ठंड पड़ी हो और बर्फ बनाने वाले के पास बर्फ बची रह जाए, तब वह सोचता है कि यह कब बिकेगी? कहाँ रखेगा उसे? अत: वह एकदम सस्ता कर देता है। तब यदि कोई सेठ कहे, 'बर्फ भर लो।' अब, बर्फ जमा कर लेता है। चाहे कितनी भी बोरियाँ बिछाकर ढके फिर भी वह कम होती जाएगी या बढ़ती जाएगी? किस तरह कम होती जाएगी? रात में कैसे कम होगी? वह तो निरंतर पिघलती ही रहती है। वैसे ही यह ज्ञान देने के बाद अहंकार भी विलय होता ही रहता है। फिर कुछ लोग तो बोरियाँ लपेटते रहते हैं, उसमें बुरादा डालते रहते हैं। अरे, मत दबाओ।

अहंकार विलय होने के बाद में 'स्व' की पहचान

प्रश्नकर्ता : यह जो 'मैं' है, वह प्रकृति है या आत्मा?

दादाश्री : 'मैं'? 'मैं' शब्द अलग चीज़ है। लेकिन 'मैं' शब्द का दुरुपयोग हुआ है। 'मैं' शुद्धात्मा के लिए, आत्मा के लिए उसका प्रयोग हो तो हर्ज नहीं है और यदि किसी अन्य जगह पर, आरोपित भाव से उसका प्रयोग हो तो वह अहंकार कहा जाता है।

यानी यह 'मैं हूँ', वह गलत जगह पर उपयोग होता था। अस्तित्व तो है ही। खुद 'मैं हूँ' ऐसा तो है ही लेकिन 'मैं क्या हूँ!' वह भान नहीं होने से 'मैं चंदूभाई हूँ', 'मैं डॉक्टर हूँ', 'मैं कलेक्टर हूँ', 'मैं इनका साला हूँ, इनका बहनोई हूँ' ऐसा बोलता रहता था। वह सब गलत निकला। अब, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह सच निकला।

वह उल्टे जाने की क्रिया थी। इसे सीधे आने की क्रिया कहा जाता है। जब तक खुद 'एक्ज़ेक्ट' शुद्धात्मा नहीं हो जाता तब तक जितना उल्टा चले थे, उतना वापस सीधा आना पड़ता है। 'मैं चंदूभाई हूँ, मैं चंदूभाई हूँ' बोला था, इसलिए जब हम वापस उतना ही 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ', बोलेंगे तब जाकर गाड़ी आगे चलेगी।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् यह अहंकार ही बोलता है न? जो उल्टा चला था, वही अब...

दादाश्री : 'मैं', 'मैं' जो बोलता है, वह अहंकार नहीं बोलता। अहंकार तो अलग रहता है। अहंकार नहीं बोलता। 'मैं', 'मैं' खुद का स्वरूप ही। अब स्वरूप अपने आप नहीं बोलता लेकिन यह क्रिया उस तरफ की हुई है। हम जो शुद्धात्मा बोलते हैं, वह शुद्धात्मा भी खुद शब्द नहीं है। अब जैसे-जैसे आपकी श्रद्धा बदलेगी, बिलीफ बदलेगी वैसे-वैसे आवरण टूटते जाएँगे। आवरण तोड़ने वाली चीज़ है यह।

लेकिन 'मैं' का अस्तित्व, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वही भान है। भान में बदलाव हुआ। यदि अहंकार होता तो काम में ही नहीं आता। वह चीज़ ही अलग है। अहंकार को लेना-देना नहीं है। अहंकार का विलय होने के बाद तो खुद के स्वरूप का 'वह' (भान) होता है। यह सब बीच का कहलाता है।

जो अहंकार को पहचान ले, उसका कल्याण

यदि अहंकार को पहचान ले तो वह भगवान बना देगा। अहंकार तो भगवान बना दे, ऐसा है। और वह अहंकार सभी कुछ करता है। उसी में से उत्पन्न हुआ है। अहंकार गलत नहीं है। ज्ञानियों का अहंकार सीधा चलता है न, वह अंतिम पद में बैठाकर ठेठ भगवान तक ले जाएगा। अहंकार शुद्ध होते, होते, होते अशुद्ध में से अशुभ में आता है, अशुभ में से शुभ में आता है और शुभ में से शुद्ध होता है लेकिन अहंकार वही का वही।

प्रश्नकर्ता : यह तो आपका वाक्य ऐसा निकला कि अहंकार को पहचाने तो भगवान बना दे, ऐसा है। अर्थात् अहंकार को पहचानना है?

दादाश्री : अहंकार को पहचाने तो बहुत हो गया न! अहंकार को कोई पहचान नहीं सकता न!

प्रश्नकर्ता : वह समझ में नहीं आया। अहंकार को पहचानना अर्थात् क्या?

दादाश्री : अहंकार को पहचानना अर्थात् पूरे *पुद्गल* (जो पूरण-गलण होता है) को पहचानना। 'मैं' कहने वाले को अच्छी तरह से पहचानना। पूरे *पुद्गल* को पहचाना, तो भगवान ही बन गया न!

प्रश्नकर्ता : वह 'मैं' अर्थात् पूरे *पुद्गल* को पहचानना, ऐसा न?

दादाश्री : 'मैं' का अर्थ ही है, पूरा *पुद्गल*। मैं यानी अन्य कोई नहीं। कभी भी ड्राइव करते समय चाहे अस्सी फुट लंबी बस हो लेकिन ड्राइवर जब स्टीयरिंग यों घुमाता है तब वह समझ जाता है कि पहिये कहाँ घूम रहे हैं! अर्थात् उस अस्सी फुट की बस को खुद का पूरा स्वरूप ही मानता है। और यदि बस तीस फुट की हो तो तीस फुट मानता है। पाँच फुट की गाड़ी हो तो पाँच फुट मानता है।

प्रश्नकर्ता : यानी वह अहंकार उस रूप हो जाता है, ऐसा?

दादाश्री : वह उसका अहंकार इतना अधिक विस्तृत होकर काम करता है इसलिए तो नहीं टकराता। हाँ, पूरे स्वरूप में काम करता है। अत: यह पूरा *पुद्गल* अहंकार का ही है। इस अहंकार को जो पहचाने, उसका कल्याण हो जाएगा! अहंकार तो सभी करते हैं लेकिन उसे पहचानते नहीं न!

प्रश्नकर्ता : इसमें अहंकार और उसे पहचानने वाला कौन है?

दादाश्री : पहचानने वाला वही, भगवान है।

प्रश्नकर्ता : अब, उस अहंकार को *पुद्गल* का स्वरूप कहा है। तो क्या फिर वह अहंकार भी भगवान बन जाता है?

दादाश्री : वह अहंकार शुद्ध होते, होते, होते, जब शुद्ध अहंकार बन जाता है तब ये 'भगवान' और 'वह', सारा एकाकार हो जाता है। शुद्ध अहंकार ही शुद्धात्मा है।

- जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्यश्री दीपकभाई के सत्संग कार्यक्रम - लाइव वेबकास्ट द्वारा इन्टरनेट से

14 नवम्बर	रात 8-30 से 10-30	**दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति**
16 नवम्बर	सुबह 8 से 9-15	**नूतन वर्ष (वि. सं. 2077)**

परम पूज्य दादा भगवान का 113वाँ जन्मजयंती महोत्सव

26-28 नवम्बर	सुबह 8 से 9	**सत्संग**
	रात 8-30 से 10	**सत्संग**
29 नवम्बर	सुबह 8 से 9-30	**जन्मजयंती दिवस**
	रात 8-30 से 10	**जन्मजयंती दिवस**
30 नवम्बर	सुबह 8 से 9	**सत्संग**
	रात 8-30 से 10	**सत्संग**

दिसम्बर पारायण (आप्तवाणी-14 भाग-2)

26-27 दिसम्बर	सुबह 10 से 12	**पारायण - वाचन तथा प्रश्नोत्तरी**
	रात 8-30 से 10-30	**पारायण - वाचन तथा प्रश्नोत्तरी**
28 दिसम्बर से 1 जनवरी	सुबह 8 से 9	**पारायण - वाचन**
	रात 8-30 से 10-30	**पारायण - वाचन तथा प्रश्नोत्तरी**
2-3 जनवरी	सुबह 10 से 12	**पारायण - वाचन तथा प्रश्नोत्तरी**
	रात 8-30 से 10-30	**पारायण - वाचन तथा प्रश्नोत्तरी**

[उपरोक्त कार्यक्रमों में समय-संजोग के अधीन परिवर्तन हो सकता है।]

विशेष निवेदन

कोरोना वायरस महामारी की वर्तमान परिस्थिति में पूज्यश्री दीपकभाई की निश्रा में आयोजित सभी कार्यक्रम तथा आप्तपुत्रों-आप्तपुत्रीओं के विविध सेन्टरों में आयोजित सभी कार्यक्रम विलंबित किए गए है। भविष्य में परिस्थिति सामान्य होने के बाद सरकार द्वारा धार्मिक कार्यक्रमों के लिए अनुमति देने के बाद कार्यक्रम आयोजित होंगे।

महामारी को ध्यान में रख कर महात्माओं को सूचित किया जाता है कि अड़ालज त्रिमंदिर संकुल में होने वाले दिपावली-नूतन वर्ष और महेसाणा में आयोजित जन्मजयंती महोत्सव महात्माओं की हाजिरी में मनाना संभव नहीं हो पाएगा। वर्तमान आयोजन अनुसार इन्टरनेट के माध्यम से ओनलाइन सत्संग तथा उत्सव मनाना जारी रहेगा।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 079-39830100, 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687 **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद:** (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

पूज्य नीरू माँ/पूज्य दीपक भाई को देखिए टी.वी. चैनल पर

भारत

- **'अरिहंत'** चैनल पर हर रोज सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3, और रात 8 से 9 (गुजराती में)
- **'साधना'** पर हर रोज सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 (हिन्दी में) - **नया कार्यक्रम**
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज सुबह 7 से 8 (हिन्दी में)
- **'वालम' टीवी** पर हर रोज शाम 6 से 6-30 (गुजराती में- सिर्फ गुजरात राज्य में) - **नया कार्यक्रम**
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में- केवल उड़ीसा में)

USA - Canada

- **'TV Asia'**- पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 EST
- **'Rishtey'** पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 EST (हिन्दी में)

U K

- **'वीनस'** टी.वी. पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 GMT (हिन्दी में)
- **'वीनस'** टी.वी. पर हर रोज सुबह 8-30 से 9 GMT (गुजराती में)
- **'MA TV'** पर हर रोज शाम 5:30 से 6:30 GMT
- **'Rishtey'** पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6 to 6-30 am GMT)

USA - UK - Africa - Australia

- **'आस्था ग्लोबल'** पर सोम से शुक्र रात 10 से 10:30 IST
  (डिश टी.वी. चैनल **U.K.**-849, **U.S.A.**-719)(गुजराती और हिन्दी में)

Australia

- **'Rishtey'** पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

Fiji - NZ - Singapore - SA - UAE

- **'Rishtey'** पर हर रोज सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में)

टिप्पणी : दूरदर्शन के विविध टी.वी. चैनलों पर प्रसारित होने वाले सत्संग कार्यक्रम 1 अगस्त 2020 से बंद हो गए हैं। दूसरी अन्य चैनलों पर कुछ दिनों में सत्संग कार्यक्रम शुरू होंगे जिनकी जानकारी आपको दी जाएगी।

अक्तूम्बर 2020
वर्ष-15 अंक-12
अखंड क्रमांक - 180

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/036/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

स्वरूपज्ञान होने पर अहंकार जाता है

अहंकार के प्रकार हैं क्या? इस रिलेटिव वस्तु को 'मैं हूँ' कहा, वही अहंकार। गर्व, मद, मत्सर, अभिमान, मान, अपमान, इन सभी अलग-अलग शब्दों का, अलग-अलग समय पर प्रयोग होता है। ये सारे स्थूल अर्थ समझने योग्य हैं, इसलिए ज्ञानियों ने अलग-अलग नाम दिए हैं। स्वरूपज्ञान के बिना संपूर्ण अहंकार जा ही नहीं सकता। अहंकार तो रस वाला है। मान व अपमान तो अहंकार का कड़वा-मीठा रस है। मूल वस्तु की प्राप्ति के बाद, अब अहंकार का रस खींच लेना है। जैसे-तैसे करके इस सारे रस को खत्म कर देंगे तभी हल आएगा।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.